उपसंहार

उपसंहार

सर्वहारा के प्रति सहानुभूति, शोषकों के विरुद्ध आक्रोश, गंभीर चिंतन तथा व्यापक अध्ययन 'सुभाषचंद्र आर्य' के व्यक्तित्व को 'मुद्राराक्षस' बनाता है। मनुष्य जीवन की विभिन्न धरातलों पर व्यापत विडम्बनाओं, विसंगतियों पर मुद्राराक्षस अपने साहित्य के माध्यम से चोट करते हैं। इन्हें जो भी गलत दिखाई देता है,उस पर ये कहीं भी समझौता नहीं करते हैं ।ये समझौता न होने के मूल में मुद्राराक्षस की चिंता मानवीय भावनाओं के विकास की और रही है। अत: वे गुदगुदाने का उद्देश्य नहीं रखते। उनका मक्सद विविध संदर्भों में व्यवस्थाजन्य बेतुकेपन का मज़ाक उड़ाते हुए उससे पीड़ित व्यक्ति की चेतना को झकझोरने का है। मुद्राराक्षस राजनीतिक पार्टियों के अवसरवाद, आपसी खींचतान, जन प्रतिनिधियों की नौटंकी आदि का सबके सामने पर्दाफाश करते हैं। उनके साहित्य में समाजवादी या मार्क्सवादी चेतना, उच्च वर्गवालों के निम्न वर्ग के लोगों का शोषण आदि सामाजिक विडंबनाओं को देख सकते हैं। इन्होंने विभिन्न राजनीतिक विषयों को उठाकर वर्तमान राजनीति की विडंबनाओं को प्रस्तुत किया है ।राजनीति के जाल में आम आदमी किस तरह फँस गया है, उसका यथार्थ चित्र खींचा है। आज रिश्वत, जमाखोरी, मुनाफ़ाखोरी, भ्रष्ट संस्थानवाद, स्वार्थपरकता, सूदखोरी, खोखले आदर्शों और सांप्रदायिक दंगों से युक्त समस्याओं का उठाते हैं ।

व्यक्ति और व्यक्ति के परस्पर सम्बन्ध, समाज और परिवेश के सम्बन्ध, आज की वैचारिकता, तकनीकी की प्रगति, पूंजीवादी अर्थव्यवस्था, जीवन की यांत्रिकता, औद्योगीकरण, नगरीकरण, नारी की चेतना, प्रेम और यौन संबंधों की परिवर्तित परिभाषा, रिश्तों में बदलाव आदि के रूप में मूल्यों का बदला रूप मुद्राराक्षस देख सकते हैं । साठोत्तरी रचनाकारों की जो प्रवृतियाँ हैं उन प्रवृतियों में प्रमुख रूप से सामजिक, राजनीतिक,

मनोविज्ञानिक और ऐतिहासिक प्रवृतियों को मुद्राराक्षस अपनाते हैं एवं अपने तर्कों, विज्ञानबोध से दूसरों से भिन्न अपने व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं।

यूँ तो देखा जाये तो संप्रदाय कला, साहित्य, राजनीति तथा धर्म प्रत्येक क्षेत्र में पाये जातें हैं। लेकिन कोई व्यक्ति अथवा समाज सांप्रदायिक एवं संप्रदायवादी क्यों कहा जाता है। धार्मिक क्षेत्र में जब कोई व्यक्ति अपने धर्म को एवं अपने धर्म की मान्यताओं को सर्वोपरि रखने के साथ किसी अन्य धर्म को हेय की दृष्टि से देखता है तो वह संप्रदायवादी कहलाता है। सांप्रदायिकता का यह रूप हमारे समाज में निरंतर एक कोढ़ की तरह भारत जैसे विविध धर्मों, संस्कृतियों वाले देश को खोखला करने पर तुला है जिसे राजनीतिक पार्टियाँ अपने स्वार्थ हितों की पूर्ति हेतु बढ़ावा भी देती हैं, और भड़काती भी हैं। आज जगह-जगह घटने वाली धार्मिक हिंसा का यह स्वरूप बहुत कुछ इस घिनौनी राजनीति के कारण ही है। अस्सी के दशक में घटी घटनाएं यथा राम जन्मभूमि, बाबरी मस्जिद आदि सांप्रदायिक घटनायें अलग और अधिक विकराल रूप में हमारे सामने मुँह बायें खड़ी होती जा रही हैं। युवा वर्ग को दिगभ्रमित करने का कार्य ये सांप्रदायिक ताकतें कर रही हैं।

ऐसे दौर में सांप्रदायिकता की समस्या को समझने में मुद्राराक्षस हमारी मदद करते हैं। मुद्राराक्षस निश्चित रूप से बड़े कथाकार हैं। सांप्रदायिकता जैसे संवेदनशील और ज्वलंत मुद्दे पर लिखना हमारे समय में किसी भी तरह के जोखिम से कम नहीं है। मुद्राराक्षस स्वंय धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति थे। वे एक प्रतिबद्ध लेखक थे। सांप्रदायिकता जैसे मुद्दे पर लिखना उनके लिए किसी तरह का शौक नहीं, बल्कि इसके विरोध में वे अपनी कलम को हथियार की तरह प्रयोग करते थे। राष्ट्रीय सहारा में सांप्रदायिकता एवं दूसरी समस्याओं में नियमित रूप से कॉलम लिखने वाले मुद्राराक्षस के दस प्रतिनिधि कहानियाँ, मुद्राराक्षस संकलित कहानियां, इक्कीस श्रेष्ठ कहानियाँ, प्रतिहिंसा तथा अन्य कहानियाँ कहानी संग्रह हमें देखने को मिलते हैं जिसमें जले मकान के कैदी, दिव्य दाह, पैशाचिक, एक बंदर की मौत, युद्ध, एहसास आदि

कहानियां सांप्रदायिकता की समस्या के विभिन्न स्वरूपों को हमारे सामने लाती हैं। उनकी इन कहानियों में समाज के विभिन्न संप्रदायों के भीतर के संबंधों और उनके तनावों को देखा जा सकता है। कोई भी समस्या कैसे किसी एक संप्रदाय को भय, असुरक्षा और नफ़रत के माहौल में से निकलने नहीं देती, यह मुद्राराक्षस की कहानियों में हमें बारीकी से देखने को मिलता है।